नाम - डॉ. रोशनी मिश्रा

महाविद्यालय का नाम - दुर्गा महाविद्यालय

संकाय - कला

पदनाम - सहायक प्राध्यापक

विभाग - हिंदी

शीर्षक - जायसी के विरह वर्णन की विशेषताएँ

भाग - 1
साहित्य प्रश्नपत्र - 1

जायसी के विरह वर्णन की विशेषताएं

(1)

मलिक मुहम्मद जायसी प्रेम की पीर के कवि है। वे सूफी काव्यधारा के मूर्धन्य कवि है। उनके हृदय से प्रेम की पीर और विरह वेदना का स्वर मुखर होकर काव्य में मूर्त रूप में विद्यमान है। 'पद्मावत' कवि की अत्यंत मार्मिक कृति है। मूलतः यह एक विरह भावना को अभिव्यक्त करने वाला काव्य है। पद्मावत में यद्यपि अनेक पात्रों का विरह वर्णन किया गया है किंतु सबसे अधिक नागमती का विरह वर्णन पाठकों को द्रवित करता है। जायसी के विरह वर्णन की विशेषताओं को हम इन बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट करेंगे -

(1) विरह की व्यापकता - 'पद्मावत' में विरह की व्यापकता अतिशयोक्ति के रूप में दिखाई गई है। विरह की आग में संपूर्ण सृष्टि जल उठती है। सृष्टि में कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं, जो इस आग में जल न उठा हो न केवल मानव बल्कि पशु-पक्षी सूर्य आकाश, पाताल स्वर्ग एवं ब्रह्मांड सभी विरहाग्नि से जलते नज़र आते है।

विरह के आगि सूर जरि कांपा, राति दिवस जरै ओहि तापा।
खिनहि सरग खिन जाइ पतारा, थिर न रहै एहि आगि अपारा।

(2) रुदन का प्राधान्य - जायसी के विरह वर्णन में रुदन की प्रधानता है। उनके विरह व्यथित पात्रों के आँसुओं में कहीं-कहीं तो पर्वत के शिखर भी डूब जाते हैं, समुद्र अपनी मर्यादा तोड़ देता है और सारी सृष्टि विरह के आँसुओं में डूब जाती है।

- गगन मेघ जस बरसै भला। पुहुमी पूरि सलिल बहि चला।
सायर टूट सिखर गा पाटा। सूझ न वार पार कहुँ घाटा।

(3) प्रकृति की संवेदना - जायसी के विरह वर्णन मे प्राकृतिक पदार्थ विरही जनों के निकट संबंधी बन गए है। - नागमती के विरह संदेश को सुनकर पक्षी उसके विरह की आग से जलने लगते है। वृक्ष अपने पत्ते गिराने लगते है।

विरह।

(2)

"जेहि पंखी के निअर होई, कहै बिरह की बात
सोइ पंखी जाइ जरि तरिवर होहि निपात।

① विरह वेदना के मर्मस्पर्शी चित्र - जायसी ने विरही जनों की पीड़ा, वेदना, कसक का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। विरह व्यथा के कारण नागमती की स्थिति दयनीय है —

सिद्धांत

विरह बान तस लाग न डोली।
रकत पसीज, भीजि गई चोली॥
सूखा हिया हार भा भारी।
हरे-हरे प्रान तजहिं सब नारी॥"

② नागमती की कृशता — विरह में नागमती जलकर कोयला हो गई है। उसके शरीर में तोले भर भी माँस नहीं रह गया विरह में उसका सारा शरीर गल-गल कर क्षीण हो गया है।

'दहि कोइला भई कंत सनेहा।
तोला माँसु रही नहीं देहा।
रकत न रहा, बिरह तन गरा।
रती-रती होई नैनन ढरा।" प्रायः संयोग के सुखद उत्सव

③ त्योहारों पर विरह का आधिक्य — तीज त्योहार पर्व आदि जब आते हैं, उन अवसरों पर विरही जन अत्यंत उग्र एवं बेचैन देखे जाते हैं। पद्मावत में भी तीज त्योहारों का उल्लेख करके नागमती की तीव्रतम पीड़ा को इस प्रकार व्यक्त किया गया है।

"अबहूँ निठुर आउ एहि बारा।
परब दिवारी होइ संसारा।"
सखि झूमक गावैं अंग मोरी, हौं झुरावँ बिछुरी मोरि जोरी।

सम्पन्न पात्रों की भी साधारण स्थिति जाभम
के विरह ं
निरूपण मे राजा रानी जैसे उच्च एवँ सम्पन्न पात्र भी साधारण पुरुष एवँ स्त्री की भाँति विरह की पीड़ा सहन करते हुए दिखाए गए हैं। इसी कारण चित्तौड़ की महारानी नागमती को वर्षा हेतु सबसे बड़ी चिंता यह है कि प्रियतम के बिना उसके घर का छप्पर कौन छवायेगा। इसलिए वह कहने लगती है।

"तपै लागि अब जेठ- आसाढ़ी। मोहि पिऊ
बिनु छाजनि भई गाढ़ी।
बरसै मेर चुबहिं नैनाहा। छपर छपर होई रहि
बिनु नाहा।
कौरौं कहा ठाट नव साजा? तुम बिनु कन्त
न छाजनि छाजा॥

नागमती रानी हुए भी एक साधारण स्त्री की भाँति भरि तथा काग से अपने प्रियतम के समीप संदेश ले जाने की बात करती है

"पिऊ सो कहेऊ संदेशड़ा, हे भौंरा
हे कागा।
सो धनि बिरहै जरि मुई, तेहिक धुआँ
हम लागा॥"

विरह वेदना में सात्विकता का प्राधान्य - जायसी के विरह निरूपण में भोग विलास की नहीं, अपितु सात्विकता की प्रधानता

०4

विरहणी नागमती भोग के प्रति अपनी अरुचि प्रकट करती हुई कहती है —

'मोहि भोग सों काज न बारी। सोंह दीठि कै चाहन हारी।।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नागमती के सिद्धांत वियोग वर्णन के रूप में जायसी ने अपनी भावुकता का सुन्दर परिचय दिया है। रानी नागमती विरहावस्था में अपना रानीपन भूल जाती है, यही कारण है कि, उसके विरह वाक्य उच्च तथा निम्न सभी वर्ग के प्राणियों को प्रभावित करते हैं। यदि जायसी विरहावस्था में नागमती के लिए स्वर्ण-सेज, रत्नजड़ित आभूषण तथा संगमरमर के महलों की बात करते तो कदाचित उनका विरह वर्णन इतना प्रभावशाली न हो पाता। अतः कहा जा सकता है कि जायसी ने विरह के गीत इतने मर्मस्पर्शी वाणी में गाये हैं कि वे सामान्य जनजीवन को ही नहीं, अपितु पशु पक्षी तथा प्रकृति के उपादानों को भी प्रभावित करते हैं। सारांशतः जायसी के विरह वर्णन में जड़-चेतन सभी को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता है।

जायसी के विरहाकुल हृदय की गहन अनुभूति का सर्वाधिक मार्मिक चित्रण नागमती के विरह वर्णन में प्राप्त होता है।